OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 4

अंत:करण को न्यायालय बनायें

- ब्र. कु.मोनिका, शांतिवन।

चुनाव के एक उम्मीदवार से लोगों ने पूछा: ''आप तो वर्षों से फलाने पक्ष को निष्ठावान व सभ्य समझते थे। अचानक पक्ष बदल कर दूसरे पक्ष में कैसे जुड़ गये?''

उम्मीदवार ने मधुर मुस्कान देते हुए कहा: ''मेरी अंतरात्मा की आवाज़ के अनुसार ही मैंने पक्ष बदला है।''

''लेकिन आपकी अंतरात्मा ने आपको क्या कहकर निर्देश दिया, यह तो बताइए'' लोगों ने प्रश्न किया।

''यही कि 'तिल में तेल न हो' तो उससे क्या आश रखना। मेरी अंतरात्मा ने कहा कि 'चल उड़ जा रे पंछी कि अब ये देश हुआ बेगाना।' अपन (बंदा) तो है अंतरात्मा का अनुकरण करने वाला आदमी! यह कहकर उम्मीदवारी बदल दी।

'अंतरात्मा की आवाज़' – कितना पवित्र शब्द! मनुष्यों में कुदरत द्वारा स्थापित एक निष्कपट चौकीदार! जो कि 'जागृत रहो' का नाद कर मनुष्य को जगाने की कोशिश करता है। मनुष्य अंतरात्मा की आवाज़ सुनता तो है, लेकिन उसका उपयोग और अर्थघटन अपनी रीति से करता है। कोर्ट में गवाही देनी हो तो मनुष्य की अंतरात्मा उसे झूठ नहीं बोलने का निर्देश देती है। लेकिन मनुष्य अंतरात्मा को कहता है ''मैं सत्य बोलूंगा, लेकिन मेरे अनुसार ही सत्य बोलूंगा। मुझे जो कहना चाहिए वो नहीं, लेकिन मेरे फायदे में जो कहना चाहिए वही कहूंगा। इसलिए हे मेरी अंतरात्मा! तुझे चुप रहना है!'' 'अंतरात्मा की आवाज़' इस शब्द को ही मनुष्य ने बेरहमी से कुचल दिया है।

'अंतरात्मा की आवाज़' – कितना पवित्र शब्द! मनुष्यों में कुदरत द्वारा स्थापित एक निष्कपट चौकीदार! जो कि 'जागृत रहो' का नाद कर मनुष्य को जगाने की कोशिश करता है। मनुष्य अंतरात्मा की आवाज़ सुनता तो है, लेकिन उसका उपयोग और अर्थघटन अपनी रीति से करता है। कोर्ट में गवाही देनी हो तो मनुष्य की अंतरात्मा उसे झूठ नहीं बोलने का निर्देश देती है। लेकिन मनुष्य अंतरात्मा को कहता है ''मैं सत्य बोलूंगा, लेकिन मेरे अनुसार ही सत्य बोलूंगा। मुझे जो कहना चाहिए वो नहीं, लेकिन मेरे फायदे में जो कहना चाहिए वही कहूंगा। इसलिए हे मेरी अंतरात्मा! तुझे चुप रहना है!''

'आत्मा की आवाज़' या 'अंत:करण' के नाद के साथ मनुष्य कुटिलतापूर्वक खेल खेलता आया है। वास्तव में 'अंतरात्मा की शुद्ध आवाज़' में ही सबसे बड़ा फायदा है जो न्याय को अंदर से तोलने के बाद सदाचार और सत्य आचरण के लिए मनुष्य को प्रोत्साहित करता है। स्वतंत्रता कहती है, जो भाता है वही करो, लेकिन अंत:करण कहता है कि जो योग्य है वही करो। मनोवेग मनुष्य को मन के वश होकर कार्य करने को प्रेरित करता है किंतु अंत:करण आत्मा को परमात्मा का संदेश ध्यान में रखने का निर्देश देता है। आज राजनीति, अर्थशास्त्र, शिक्षा तथा विज्ञान के क्षेत्र में क्यों इतने प्रश्न उठ खड़े होते हैं? इसका जवाब एक प्रसिद्ध चिंतक ने दिया है। उनके मतानुसार मनुष्य की आत्मा ही राजनीति है, वही अर्थशास्त्र है, वही शिक्षा है और वही विज्ञान। इसलिए मनुष्य को आवश्यकता है अपनी अंतरात्मा को सुसंस्कृत बनाने की। यदि अंतरात्मा को सुसंस्कृत बना दिया जाये तो राजनीति, अर्थशास्त्र, शिक्षा और विज्ञान के प्रश्नों का अपने आप ही निराकरण हो जाएगा।

जितने हद तक मनुष्य का अंत:करण परिशुद्ध, उतने ही हद तक जीवन पवित्र। आजकल भ्रष्टाचार, प्रपंच, वैरवृत्ति आदि का बोलबाला देखने को मिलता है, ये मनुष्यों द्वारा अंतरात्मा को स्वयं का गुलाम बनाने की द्रव्यवृत्ति का ही परिणाम है।

विलियम मोर्बे के शब्दों में जानें तो:

कायरता पूछती है– काम में कोई जोखिम तो नहीं है न?

स्वार्थ पूछता है– क्या ये कार्य फायदेमंद है?

अहंकार पूछता है– क्या ये काम लोकप्रिय हो सकता है?

लेकिन अंत:करण पूछता है– क्या ये कार्य न्यायसंगत है?

इसलिए कहते हैं कि वो मनुष्य अंधा है जो खुद के अंत:करण को देख नहीं सकता और वो मनुष्य लंगड़ा है जो कि सत्यपथ को छोड़कर भटकता रहता है। आज के मनुष्यों के कान भी धीरे-धीरे सत्यप्रूफ बनते जा रहे है!

एक पुस्तक में लिखा है कि ''एक डाकू साधु के वेश में लोगों को लूटा करता था। एक दिन व्यापारियों का एक काफिला उस डाकू के अड्डे की ओर से गुज़र रहा था। व्यापारियों का काफिला देख डाकुओं को लगा कि घर बैठे लक्ष्मी टीका लगाने आई है। उन डाकुओं ने संगठित रूप से व्यापारियों को चारो तरफ से घेर लिया। लेकिन एक व्यापारी वहां से भागने में सफल हो गया। वो वहां से भागकर एक गुफा में प्रवेश कर गया।

गुफा में पहुंचकर उसने देखा कि एक साधु आँखें बंद कर माला फेर रहा है। उस व्यापारी ने गुफा में बैठे साधु से शरण मांगी और डाकुओं से अपनी धन की रक्षा के लिए उसने सोने की मुहरों की पुड़िया उस साधु को सौंपी। साधु ने कहा: आप ये मुहरों की थैली बाजू के कोने में छोड़ दें और निर्भय हो जायें। साधु को थैली सौंपकर व्यापारी जंगल में छिप गया।''

दूसरे व्यापारियों का सब माल लूटने के बाद डाकू चले गये। ये देख व्यापारी भी जंगल से बाहर निकलकर, साधु को दी हुई मुहरों की थैली लेने गुफा में पहुंचा। वहाँ उसने जो दृश्य देखा, उसे देख व्यापारी स्तब्ध रह गया। वो साधुबाबा तो डाकुओं की टोली का सरदार था और लूटे हुए धन का हिस्सा साथी डाकुओं को बांट रहा था। ये देख व्यापारी की बुद्धि कुंठित हो गई।

डर के कारण व्यापारी भागने का प्रयत्न करने लगा। इतने में साधु वेशधारी डाकु सरदार की नज़र उस व्यापारी पर पड़ी। उसने व्यापारी को आवाज़ देकर कहा: ''आप अंदर आकर अपनी मुहरों की थैली ले लीजिए।'' व्यापारी कांपते-थर्राते गुफा के अंदर गया। उसने देखा कि उसने मुहरों की थैली जहां रखी थी, वो वहीं पड़ी थी। व्यापारी अपनी थैली लेकर बाहर निकल गया।

डाकुओं ने अपने साधुवेशधारी सरदार से पूछा: ''हाथ में आया धन आपने व्यापारी को क्यों सौंप दिया?'' साधु वेशधारी सरदार ने कहा: ''वो व्यापारी मुझे भगवान समान मानकर, मोह-माया से मुक्त मानकर, मुझपे भरोसा रखकर, अपने धन की रक्षा के लिए अपनी मुहरों की थैली मेरे पास रखकर गया था। भगवान के प्रति आस्था रखने वाले मेरे साधुवेश पर उसे पूर्ण विश्वास था। इसलिए मैंने भी अपना कर्तव्य निभाने के लिए अंतरात्मा से प्रेरित होकर साधुवेश की प्रतिष्ठा बचाई है। मैंने व्यापारी के विश्वास की रक्षा की है, ना कि उसके धन की!''

यह है अंतरात्मा की आवाज़। सुनना चाहें तो मनुष्य भी सुन सकते हैं, साधु भी सुन सकते हैं और शैतान भी। एक विशेष वक्तव्य में बिहार के तत्कालीन राज्यपाल डॉ. ज़ाकिर हुसैन ने आचार्य महाप्रज्ञ से कहा था कि आज़ादी के बाद देश में अनेक कारखानों का विकास हुआ है, लेकिन मनुष्य को मनुष्य बनाने का एक भी कारखाना विकसित नहीं हुआ!

बात तो सच है। ऐसा कारखाना जहां सच्चे मानव का निर्माण हो सके, जहां मनुष्य के चरित्र का निर्माण हो सके तथा जहां उन्हें प्रमाणिकता व नैतिकता के ढांचे में ढ़ाला जा सके, ऐसे कारखाने का आज तक निर्माण नहीं हो सका। यह भी सत्य है कि बाह्य प्रयत्नों से ऐसा कारखाना खुल भी नहीं सकता। मनुष्य को स्वयं के अंत:करण के द्वारा ही खुद के भीतर ऐसा कारखाना खोलना होगा। अंत:करण को पावन बनाने के सात उपाय कौन से हैं?

1. मनुष्य रूप में मिले जीवन को वरदान व गौरव समझें। 2. अंत:करण को मोह-माया, वासना-आसक्ति आदि दूषणों से जहां तक हो सके वहां तक मुक्त रखें। 3. दैनिक जीवन में आचरण को प्रत्येक क्षण पवित्रता की कसौटी पर चेक करते रहें। कामचोरी, हरामखोरी, रिश्वतखोरी को जीवन से सदा के लिए निकाल बाहर करें। 4. जब सत्य और स्वार्थ में से किसी एक को चुनना हो तो सत्य को मजबूती के साथ पकड़ कर रखें। 5. विवेक को अपना मित्र बनाकर आत्म-जागृति के साथ चलने का दृढ़ संकल्प लें। 6. अंत:करण की आवाज़ को समझें, उसका खून न करें। 7. प्रत्येक कार्य शुद्धभाव से करें। अंत:करण को न्यायालय तुल्य मानें।

कल्याण वेस्ट(महा.)। महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन करते हुए प्रोफेसर सीमा पवार, डॉ. शशि सिंग, ब्र.कु. अल्का, नगरसेविका बहन, पंडित जी, जान्वटी पोटे तथा अन्य।

रीवा-म.प्र.। सेवाकेन्द्र की रजत जयन्ती स्मारिका का विमोचन करते हुए राजेन्द्र शुक्ल,खनिज ऊर्जा एवं जनसम्पर्क मंत्री, डॉ. सज्जन सिंह,समाजसेवी, राहुल गौतम,जिला पंचायत उपाध्यक्ष, ब्र.कु. निर्मला तथा अन्य।

बलोतरा-राज.। राजपुरोहित समाज के वेदान्त आचार्य श्री श्री ध्यानारामजी महाराज को विद्यालय के परिचय के साथ साहित्य भेंट करते हुए डॉ. सविता,माउण्ट आबू। साथ हैं ब्र.कु. रंजु तथा ब्र.कु. उमा।

राजेन्द्रनगर-बरेली(उ.प्र.)। सी.बी. गंज के सरस्वती शिशु मंदिर में नैतिक मूल्यों पर समझाते हुए ब्र.कु. प्रभा। साथ हैं ब्र.कु. शरद, स्कूल के प्रधानाचार्य, टीचर्स तथा स्कूली छात्र-छात्राएं।

बारपली-ओडिशा। 78वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती के अवसर पर सागर फूड प्रोडक्ट्स एण्ड पुष्पा स्टोन क्रशर के मालिक हेम सागर साहू को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. ममिना।

राजसमंद-नाथद्वारा(राज.)। लिंकिंग हार्ट्स दूरिज़म के कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. कमलेश। साथ हैं मलिकेश भारद्वाज,डिस्ट्रिक्ट जज, गिरीराज राठी,होटल एसोसिएशन अध्यक्ष, ब्र.कु. रीटा तथा ब्र.कु. पूनम।